



226090 - चित्र वाले पोशाक पहनने का हुक्म

प्रश्न

उस पोशाक के पहनने का क्या हुक्म है जिसमें जानवर की छवि (चित्र) होती है ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

ऐसा पोशाक पहनना जायज़ नहीं है जिस पर जीवधारी और चेतन प्राणियों की कोई चित्र (छवि) उत्कीर्ण हो। क्योंकि इस प्रकार की छवियाँ फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) को घर में प्रवेश करने से रोकती हैं, इस कारण कि इस में अल्लाह तआला की रचना का अनुकरण और बराबरी करना पाया जाता है। और इस कारण भी कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने चित्रों को मिटाने का आदेश जारी किया है।

इब्ने बाज़र हिमहुल्लाह फरमाते हैं :

“मुसलमान के लिए जायज़ नहीं है कि वह ऐसे पोशाक में नमाज़ पढ़े जिन में चित्र और छवियाँ बनी हुई हों, चाहे वे छवियाँ (तस्वीरें) मनुष्य की हों या अन्य चेतन प्राणियों और जीवधारियों की हों जैसे- घोड़े, या ऊँट या पक्षि।”

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने फ़रमाया : (किसी भी चित्र को न छोड़ना मगर उसे मिटा देना) एक दूसरे स्थान पर आप ने फरमाया : (चित्र बनाने वालों को किया मत के दिन अज़ाब (यातना) दिया जाएगा, और उन से कहा जाएगा कि : जिन तस्वीरों को तुम ने बनाया है उन में जान डालो) और इसी तरह जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने आयशा रजियल्लाहु अन्हा के द्वार पर एक पर्दा देखा, जिसमें तस्वीरें बनी थीं तो आप ने उसको फ़ाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और आपका चेहरा बदल गया। अतः किसी भी मुसलमान पुरुष और महिला के लिए जायज़ नहीं है कि वह चेतन प्राणियों के चित्रों वाले पोशाक पहने, न तो कमीस, न चादर, न अमामा (पगड़ी) और न इसके अलावा कोई अन्य कपड़ा पहने, और न ही उसे घरों का पर्दा बनाए, ये सारी चीज़ें वर्जित और निषिद्ध हैं।” शैख इब्ने बाज़र की साइट से समाप्त हुआ।

शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाहने फरमाया :

“मनुष्य के लिए जायज़ नहीं है कि वह कोई ऐसा कपड़ा पहने जिसमें किसी मानव या जानवर की तस्वीर हो। इसी तरह उसके लिए गुत्रा या शिमागया इस जैसी कोई अन्य चीज़ पहनना जायज़ नहीं है जिसमें किसी मनुष्य या जानवर का चित्र हो। क्योंकि



नबीसल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम से प्रमाणितहै कि आपने फरमाया :

“निःसन्देहस्वर्गदूत उस घरमें प्रवेश नहींकरते हैं जिस मेंकोई चित्र हो ।” (सहीह बुखारी औरसहीह मुस्लिम) ।

“मजमूओ फतावा वरसाइल अल-उसैमीन” (2/274) से समाप्त हुआ ।

लेकिन अगरपोशाक में बनेचित्र और बेलबूटेनिर्जीव के हैं: तो उनके पहननेमें कोई आपत्तिकी बात नहीं है ।

इफ्ता कीस्थायी समिति केविद्वानों ने कहा :

“चित्र में वर्जन(निषेध) का आधारउसका चैतन प्राणियोंके चित्र का होनाहै, चाहे वह अंकितहो या दीवारोंया कपड़ों परचित्रित हो,या बुनी हुई हो,और चाहे वह रीशा(पक्षियों के परों)से बनी हो या कलमसे या मशीन के द्वारा, और चाहे यह चित्रअपनी प्रकृति परहो या उसमें कल्पनादाखिल हो गई हो,चुनाँचे वह छोटीकर दी गई हो या बड़ीकर दी गयी हो यासुन्दर कर दी गयीहो या विकृत करदी गयी हो,या वह कंकालकी प्रतिनिधित्वकरने वाली लाइनोंके रूप में कर दीगयी हो । अतः उनचित्रों के निषिद्धहोने का आधार उनकेचैतन प्राणियोंके चित्रों काहोना है ।”

“स्थायी समितिके फतावा ”(1/ 696) से समाप्त हुआ ।

तथा उनकायह भी कहना है कि :

“निर्जीव दृश्योंजैसे पहाड़ों,पेड़ों,घाटियों,नदियों और समुद्रोंके चित्र बनानेमें कोई हानि नहींहै, क्योंकि उसके अंदर कोई निषेध(वर्जन) नहीं है ।”

“स्थायी समितिके फतावा” (1/315) से समाप्त हुआ ।